शब्दार्थ ⇒

पाँयनि - पैरो मे
मंजु - सुन्दर
बजै - बजाना
किंकिनि - करधनी
मधुराई - मधुरता
साँवरे - कृष्ण
लसै - सुशोभित होना।
पीत - पीला
हुलसै - आनन्दित हो रहा है।
सुहाई - सुशोभित है।

प्रसंग ⇒ प्रस्तुत पद्यांश रीतिकाल के कवि देव द्वारा रचित "सैवया" से लिया गया है। इसमे कवि ने सुन्दर शब्दो द्वारा श्रीकृष्ण के सुन्दर रूप एव उनके पहनावे और वेशभूषा की अभिव्यक्ति प्रदर्शित की है।

व्याख्या ⇒ कवि देव कृष्ण के रूप-सौन्दर्य का वर्णन करते हुए कहते है कि श्रीकृष्ण के पैरो मे सुन्दर पायल है। जो बजते हुए मधुर आवाज कर रही है। और उनकी जो कमर मे कमरबंद शोभा कर रहा है। जिसकी ध्वनि मधुर है। और कृष्ण का जो साँवला शरीर है, उसके उपर जो पीले वस्त्र पहने है, और अत्यन्त शोभा दे रहे है। और उनके हृदय पर फूलो की माला भी अत्यधिक शोभित कर रही है।

माथे किरीट बडे दृग चंचल मंद हँसी मुखचंद जुन्हाई।

जै जग - मंदिर - दीपक सुंदर, श्रीवज्रदूलह 'देव' सहाई ॥

शब्दार्थ ⇒ किरीट - मुकुट
मुखचंद - चन्द्रमा जैसा मुँह
जुन्हाई - ~~चाँदनी~~ चाँदनी
वज्रदुलह - वज्र के दूल्हे
सहाई - सहायक
दृग - नेत्र

व्याख्या ⇒ कवि देव कहते हैं कि कृष्ण के माथे पर मुकुट विराजमान है। और उनके नेत्र आँख बड़ी - बड़ी और नटखट है तथा उनके मुँह पर चन्द्रमा के चाँदनी के जैसी मधुर मुस्कान है। आज वज्र के दूल्हे कृष्ण विश्व के सभी मंदिरो मे सुन्दर विराजमान है। जो मंदिर दीपक जलते है उनकी तरह शोभाशाली प्रतित हो रहे है। उन प्रभु की जय हो। और वे हमेशा इसी रुप मे बने है रहे। कवि देव की यह इच्छा है कि वे वज्र दूल्हे के समान हमेशा सबके सहायक बने रहे।

⇒ कवित ⇒

डार द्रुम पलना बिछौना नव पल्लव के,
सुन झगुला सोहे तन छवि भारी दे।
वन झूलावे, 'केकी कीर बतरावे 'देव'
कोकिल हलावे - दुलसाव कर तारी दै ॥

शब्दार्थ ⇒ डार द्रुम - पक्षियो की उडती हुई झुंड
बिछौना - फैला हुआ

Page No. :
Date :

नव पल्लव - पेड से ~~कि~~ निकला हुआ कोमल पत्ता
झगुला - झबला
केकी कीर बतरावें - मोर - तोता
कोकिल - कोयल
तारी - ताली
हलावें हुलसाव ~~कु~~लग बातो की मिठास

भावार्थ → कवि देव जो है वो बसंत ऋतु का सुंदर वर्णन करते हुए बता रहे है कवि कहते ~~कि~~ है कि वसंत बालक का झूला पेडो की टहनिया है और नई - नई कोमल और नई - नई कोमल पत्तियो से वन को फूलो से बिछाया है। और बहुत मुलायम और आरामदेह है। वसंत के रुप में बालक के शरीर पर फूलो से वन को सजाया है। और उस बालक के शरीर पर फूलो झबला रखा है। हवा चलने से जब पेड की डालियाँ हिलने लगती है तो कवि को ऐसा लगता है कि मानो उस पालने को झूला रही है। मोर और तोता उससे बाते कर रहे है। और कोयल तो मानो अपनी बातो की मिठास से और ताली बजाकर उसे प्रसन्न कर रही है।

पूरित पराग सों उतारो करे राई नोन
कंजकली नायिका लतान सिर सारी दै।
मदन महीप जू को बालक बसंत ताहि
प्रातहि जगावत गुलाब चटकारी दै॥

~~व्याख्या~~ **शब्दार्थ →**

नोन - नमक
पूरित - चारो ओर
राई नोन - पराग के कण
पंकजकली - कमल की कली
मदन महीप - कामदेव का पुत्र
प्रातहि - सुबह - सुबह
जगावत - जगाना
चटकारी - चुटकी

व्याख्या ⇒ कवि देव जो है वो बता रहे है कि इस समय चारो और फूलो के पराग बिखरे मिलते है। उसकी ओर संकेत करते हुए कवि कहते है मानो कोई बालक वंसत को नजर लगने से बचाने के लिए उस पर राई और नमक उतार रहा है। कमल की कली रूप नायिका लता रूपी साडी को सिर पर ओढकर भरे पराग को बिखेर कर मानो बालक की नजर उतार रही है कवि के अनुसार कामदेव जो राजा है, उनका पुत्र है यह वसंत और सुबह - सुबह उसे चुटकी बजाकर गुलाब जगाता है। इस प्रकार वसंत ऋतु मे प्रकृति मे उपलब्ध सारी चीजो का कवि ने वर्णन किया है।

फटिक सिलानि सौं सुधार्यौ सुधा मंदिर,
उदधि दधि को सो अधिकाइ उमगे अमंद।
बाहर ते भीतर लौं भीति न दिखैए देव
दूध को सो फेन फैल्यौ आँगन फरसबंद ॥
तारा सी तरुनि तामे ठाढ़ी झिलमिली होति
मोतिन की जोति मिल्यो मल्लिका को मकरंद।

आरसी से अंबर में आभा सी उजारी लगै।
प्यारी राधिका को प्रतिबिंब सो लगत चंद ॥

शब्दार्थ → फटिक - काँच की तरह सफेद रंग का पत्थर (संगमरमर)
सिलानी - ~~साफ~~ पत्थर
सुधारयो - मरम्मत करना
सुधा मंदिर - अमृत मंदिर
उदधि - सागर

भावार्थ → कवि ने यहाँ दूधिया चाँदनी से नहाई को अमृत मंदिर के रूप में माना है। उज्ज्वल की चट्टान पर बना हुआ है स्फटिक अत्यंत सफेद उजाला उस कीमती नग पर हो रहा है। और प्रकृति में चारो ओर बिखरी चाँदनी को देखकर कवि को ऐसा लगता है मानो दही का सागर उमड़ता चला आ रहा है। कवि देव जो है वो कहते है कि इस सुधा मंदिर की दीवार के अन्दर से होकर रोशनी में हृदय तक पहुँच रही है। और इस आँगन के फर्श पर मानो दूध का झाग फैला पड़ा हो।

शब्दार्थ → तारा - तारे
ठाढ़ी - ठंडी रात
झिलमिली - झिलमलाते
मोतिन - मोती
जोति - ज्योति

आससी - आस्था
आभा - आकाश
~~प्रतिबिंबि~~ प्रतिबिंब - काँच

भावार्थ → कवि देव कहना चाहते हैं कि इस चाँदनी रात के रूप मे जो अमृत मंदिर है वहा टिमटिमाते तारे दिखाई पड रहे हैं ऐसे मानो कि एक सुंदर स्त्री ने मोतियो से पहने खडी हो और उसके उपर तारो की चमक पड रही हो। इसलिए चारो ओर पुरा वातावरण उजाले से भर गया हो। इसी तरह ~~का~~ आकाश भी तारो की चमक से सुंदर काँच की तरह चमक रहा है। जिसमे राधा का मुह चद्रमा की तरह दिख रहा है। क्योंकि कवि ने यहा चन्दमा की तुलना राधा के मुहँ से की है।